

श्रीशाकम्भरीपञ्चकम्

Shri Shakambhari Panchakam

sanskritdocuments.org

August 11, 2018

---

# Shri Shakambhari Panchakam

---

## श्रीशाकम्भरीपञ्चकम्

---

### Sanskrit Document Information



---

Text title : shAkambharIpanchakam

File name : shAkambharIpanchakam.itx

Category : devii, dashamahAvidyA, kavacha, shankarAchArya

Location : doc\_devii

Author : Shankaracharya

Transliterated by : Prakash Ketkar

Proofread by : Prakash Ketkar, NA

Acknowledge-Permission: <http://ioustotra.blogspot.com>

Latest update : August 5, 2018

Send corrections to : [Sanskrit@cheerful.com](mailto:Sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.


**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

August 11, 2018

*sanskritdocuments.org*

---



श्रीशाकम्भरीपञ्चकम्



श्रीवल्लभसोदरी श्रितजनश्रिद्वायिनी श्रीमती  
श्रीकण्ठार्धशरीरगा श्रुतिलसन्माणिक्यताटङ्कका ।  
श्रीचक्रान्तरवासिनी श्रुतिशिरः सिद्धान्तमार्गप्रिया  
श्रीवाणी गिरिजात्मिका भगवती शाकम्भरी पातु माम् ॥ १ ॥

शान्ता शारदचन्द्रसुन्दरमुखी शाल्यन्नभोज्यप्रिया  
शाकैः पालितविष्टपा शतदृशा शाकोल्लसद्विग्रहा ।  
श्यामाङ्गी शरणागतार्तिशमनी शक्रादिभिः शंसिता  
शङ्कर्यष्टफलप्रदा भगवती शाकम्भरी पातु माम् ॥ २ ॥

कञ्जाक्षी कलशी भवादिविनुता कात्यायनी कामदा  
कल्याणी कमलालया करकृतां भोजसिखेटाभया ।  
कादंवासवमोदिनी कुचलसत्काश्मीरजालेपना  
कस्तूरीतिलकाञ्चिता भगवती शाकम्भरी पातु माम् ॥ ३ ॥


भक्तानन्दविधायिनी भवभयप्रध्वंसिनी भैरवी  
भर्मालङ्कृतिभासुरा भुवनभीकृद् दुर्गदर्पापहा ।  
भूमृन्नायकनन्दिनी भुवनसूर्भास्यत्परः कोटिभा  
भौमानन्द विहारिणी भगवती शाकम्भरी पातु माम् ॥ ४ ॥

रीताम्नायशिखासु रक्तदशना राजीवपत्रेक्षणा  
राकाराजकरावदातहसिता राकेन्दुबिम्बस्थिता ।  
रुद्राणी रजनीकरार्भकलसन्मौली रजोरुपिणी  
रक्षः शिक्षणदीक्षिता भगवती शाकम्भरी पातु माम् ॥ ५ ॥


श्लोकानामिह पञ्चकं पठति यः स्तोत्रात्मकं शर्मदं  
सर्वापत्तिविनाशकं प्रतिदिनं भक्त्या त्रिसन्ध्यं नरः ।  
आयुःपूर्णपारमर्थममलां कीर्तिं प्रजामक्षयां  
शाकम्भर्यनुकम्पया स लभते विद्यां च विश्वार्थकाम् ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शाकम्भरीपञ्चकं सम्पूर्णम् ॥

---

——  
*Shri Shakambhari Panchakam*

pdf was typeset on August 11, 2018

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

